



हिंदी समकालीन कहानी में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ

प्रजापति पुष्पाबहन मोतीभाई

हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन

पीएचडी रिसर्च स्कॉलर

मेल iampushpapraajapati@gmail.com

Mo.no. 77874311718

पता- 101, इंदिरानगर सोसाइटी लाखवड रोड मेहसाणा 1

➤ सार (Abstract)

प्रस्तुत शोधपत्र हिंदी समकालीन कहानी-साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज का मध्यवर्ग एक ऐसी सामाजिक इकाई है जो निरंतर परिवर्तनशील परिस्थितियों, आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक अपेक्षाओं, नैतिक द्वंद्व तथा भावनात्मक असंतोष के बीच संघर्षरत दिखाई देता है। समकालीन हिंदी कहानीकारों ने मध्यवर्ग के इस द्वंद्वपूर्ण और तनावग्रस्त जीवन को अत्यंत यथार्थवादी, संवेदनशील और आलोचनात्मक दृष्टि से अभिव्यक्त किया है। इस शोधपत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार आकांक्षाएँ और सीमाएँ, सुविधा और असुरक्षा, नैतिकता और अवसरवाद-ये सभी विरोधी तत्व मध्यवर्गीय जीवन को विडंबनात्मक बना देते हैं। समकालीन कहानियाँ केवल स्थितियों का चित्रण न होकर सामाजिक-आर्थिक संरचना, मूल्य-संकट और व्यवस्था की विसंगतियों पर गंभीर प्रश्न उठाती हैं। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि समकालीन कहानी साहित्य समाज के आत्ममंथन और परिवर्तन की चेतना को जाग्रत करने का सशक्त माध्यम है।

➤ बीज शब्द

समकालीन कहानी, मध्यवर्ग, विडंबना, सामाजिक यथार्थ, मूल्य संकट

➤ प्रस्तावना

हिंदी समकालीन कहानी भारतीय समाज के बदलते यथार्थ की सर्वाधिक सशक्त और संवेदनशील अभिव्यक्ति मानी जाती है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में आए तीव्र सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने मनुष्य के जीवन को जटिल बना दिया है। इस जटिलता का सबसे अधिक प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ा है। आज का मध्यवर्ग न तो आर्थिक रूप से पूर्णतः सुरक्षित है



और न ही सामाजिक रूप से संतुष्ट। वह एक ऐसी वर्गीय संरचना में स्थित है जहाँ आकांक्षाएँ निरंतर बढ़ रही हैं, किंतु संसाधन सीमित हैं।

मध्यवर्ग आधुनिकता का वाहक भी है और उसका सबसे बड़ा शिकार भी। शिक्षा, नौकरी, परिवार और नैतिकता के सहारे वह एक संतुलित जीवन जीना चाहता है, किंतु भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा ने उसके जीवन को अस्थिर बना दिया है। इसी तनावपूर्ण स्थिति से मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ जन्म लेती हैं। समकालीन हिंदी कहानीकारों ने इन विडंबनाओं को व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक दबावों और व्यवस्था से टकराव के माध्यम से उजागर किया है।

➤ मध्यवर्ग : एक सामाजिक यथार्थ

मध्यवर्ग आधुनिक भारतीय समाज की रीढ़ माना जाता है। यह वह वर्ग है जो समाज की आर्थिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक संरचना को संचालित करता है। शिक्षा, नौकरी, परिवार, नैतिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा इसके प्रमुख आधार हैं। मध्यवर्ग न तो श्रमिक वर्ग की तरह हाशिए पर है और न ही उच्च वर्ग की तरह सत्ता और पूँजी का स्वामी है। यही 'बीच की स्थिति' उसकी सबसे बड़ी विडंबना है।

स्वतंत्रता के बाद मध्यवर्ग का विस्तार हुआ, किंतु उसके साथ-साथ उसकी समस्याएँ भी बढ़ती चली गईं। निजीकरण और वैश्वीकरण के दौर में रोजगार की अनिश्चितता, बढ़ती महँगाई और उपभोक्तावादी संस्कृति ने मध्यवर्ग को असुरक्षा के घेरे में डाल दिया है। सामाजिक अपेक्षाएँ, दिखावे का दबाव और भविष्य की चिंता उसके जीवन को मानसिक तनाव से भर देती हैं। समकालीन हिंदी कहानी इसी सामाजिक यथार्थ को अपना कथ्य बनाती है और मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताओं को बिना अलंकरण के प्रस्तुत करती है।

➤ मध्यवर्गीय जीवन की प्रमुख विडंबनाएँ

(क) आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक दिखावा

मध्यवर्गीय जीवन की सबसे बड़ी विडंबना उसकी आर्थिक असुरक्षा है। सीमित आय, बढ़ती आवश्यकताएँ और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की विवशता उसे निरंतर तनाव में रखती है। वह अपनी वास्तविक आर्थिक स्थिति को छिपाकर 'सम्मानजनक' जीवन जीने का अभिनय करता है।

समकालीन कहानियों में यह स्थिति बार-बार उभरती है कि मध्यवर्गीय व्यक्ति कर्ज, मानसिक दबाव और असंतोष के बावजूद सामाजिक मानकों को निभाने के लिए विवश है। यह दिखावा उसे भीतर से खोखला कर देता है, किंतु वह समाज के सामने इसे स्वीकार नहीं कर पाता। यह द्वंद्व आर्थिक यथार्थ और सामाजिक अपेक्षा के बीच की गहरी विडंबना को उजागर करता है।



(ख) नैतिक मूल्यों और अवसरवाद का द्वंद्व

मध्यवर्ग स्वयं को नैतिक मूल्यों का संरक्षक मानता है। ईमानदारी, परिश्रम और नैतिकता उसके जीवन-मूल्य हैं। किंतु जब वही व्यक्ति सफलता, पद और आर्थिक सुरक्षा के लिए संघर्ष करता है, तो उसे कई बार अपने मूल्यों से समझौता करना पड़ता है।

समकालीन हिंदी कहानियों में यह नैतिक द्वंद्व अत्यंत प्रभावी ढंग से चित्रित हुआ है। पात्र जानते हैं कि व्यवस्था भ्रष्ट है, फिर भी उसी व्यवस्था का हिस्सा बनने को विवश हैं। ईमानदारी और सफलता के बीच का यह संघर्ष मध्यवर्गीय जीवन की सबसे पीड़ादायक विडंबना है, जहाँ सही होना भी हार में बदल जाता है।

(ग) पारिवारिक संबंधों में तनाव

मध्यवर्गीय परिवार बाहरी रूप से अनुशासित और संगठित दिखाई देता है, किंतु भीतर से वह तनाव और संवादहीनता से ग्रस्त होता है। आर्थिक दबाव, नौकरी की व्यस्तता और सामाजिक अपेक्षाएँ पारिवारिक रिश्तों को औपचारिक बना देती हैं।

पति-पत्नी, माता-पिता और संतान के बीच संवाद की कमी समकालीन कहानियों में एक प्रमुख विषय के रूप में उभरती है। परिवार, जो कभी सुरक्षा और संवेदना का केंद्र था, अब तनाव और दायित्व का बोझ बनता जा रहा है। यह स्थिति मध्यवर्गीय जीवन की एक गहरी सामाजिक और भावनात्मक विडंबना है।

(घ) सपनों और यथार्थ का टकराव

मध्यवर्ग बड़े सपने देखता है—अच्छी शिक्षा, सुरक्षित नौकरी, बेहतर भविष्य और सामाजिक उन्नति। किंतु यथार्थ बार-बार उसे उसकी सीमाओं का बोध कराता है। शिक्षित होने के बावजूद बेरोज़गारी, अस्थायी नौकरियाँ और असंतोष उसके जीवन का हिस्सा बन जाते हैं।

समकालीन कहानियों में यह टकराव अत्यंत मार्मिक रूप में प्रस्तुत हुआ है। सपनों का टूटना केवल आर्थिक विफलता नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्मविश्वास और पहचान का संकट भी है। यही स्थिति मध्यवर्गीय जीवन को मानसिक रूप से त्रासद बना देती है।

➤ समकालीन कहानीकारों की दृष्टि

समकालीन हिंदी कहानीकारों ने मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थवाद के साथ प्रस्तुत किया है। उदय प्रकाश, संजीव, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अलका सरावगी जैसे कहानीकारों की रचनाओं में मध्यवर्ग कोई आदर्श नायक नहीं, बल्कि परिस्थितियों से जूझता हुआ साधारण मनुष्य है।



उनके पात्र व्यवस्था से टकराते हैं, किंतु अक्सर हार जाते हैं। यह हार व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की आलोचना बन जाती है। समकालीन कहानीकार मध्यवर्ग के माध्यम से व्यवस्था की विसंगतियों, मूल्य-संकट और मानवीय संवेदना के हास को उजागर करते हैं।

➤ शिल्प और भाषा में विडंबना

समकालीन हिंदी कहानियों की भाषा सरल, संवादात्मक और यथार्थपरक है। अलंकारिक भाषा के स्थान पर जीवन की सीधी और प्रभावी अभिव्यक्ति को महत्व दिया गया है। विडंबना, व्यंग्य, प्रतीक और आंतरिक एकालाप जैसी शिल्पगत तकनीकें मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं को गहराई प्रदान करती हैं।

भाषा की यह सहजता पाठक को पात्रों से जोड़ती है और उनकी पीड़ा को अनुभूत कराती है। शिल्प और कथ्य का यह सामंजस्य समकालीन कहानी को सामाजिक दस्तावेज़ के रूप में स्थापित करता है।

➤ निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी समकालीन कहानी में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ आधुनिक भारतीय समाज की गहन सच्चाइयों को उजागर करती हैं। आर्थिक असुरक्षा, नैतिक द्वंद्व, पारिवारिक तनाव और सपनों का टूटना—ये सभी तत्व मध्यवर्गीय जीवन को त्रासद और विडंबनात्मक बनाते हैं।

समकालीन हिंदी कहानीकारों ने मध्यवर्ग के जीवन-संघर्ष, भावनात्मक अकेलेपन और सामाजिक दबावों को यथार्थवादी तथा आलोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य को सामाजिक हस्तक्षेप का सशक्त माध्यम बनाया है। यह साहित्य न केवल यथार्थ का चित्रण करता है, बल्कि समाज को आत्ममंथन और परिवर्तन की दिशा में प्रेरित भी करता है।

➤ संदर्भ सूची

- नामवर सिंह – कहानी : नई कहानी
कमलेश्वर – नई कहानी की भूमिका
संजीव – समकालीन कहानी विमर्श
उदय प्रकाश – चयनित कहानियाँ
रामविलास शर्मा – साहित्य और समाज
मधुरेश – हिंदी कहानी : यथार्थ और दृष्टि